अमीर खुसरो के जीवन पर दरगाह निजामुद्दीन में प्रधानमंत्री श्री चरण सिंह का भाषण

दिनांक : 8/10/1979
स्थान : दिल्ली

जनाबे सज्जदानशीन साहब और दोस्तो,

मैं सज्जादानशीन साहब का बहुत मशकूर हूं कि उन्होंने मुझ आज इस मौके पर उपस्थित होने का मौका दिया, अवसर दिया। मैं अपने आपको इस अवसर पर कुछ कहने के काबिल नहीं समझता। बिल्कुल इसके लिए नाकाबिल हूँ। क्योंकि मुझे हजरत अमीर खुसरो की बावत ज्यादा जानकारी नहीं है, सिवाय इसके कि जो मैंने इतिहास में, व तवारीख थोड़ी बहुत पढ़ी है।

अमीर खुसरो साहब एक ऐसे व्यक्ति थे कि जो वजीरे आजम भी गालिबन रहे किसी एकआध सुल्तान के और साथ ही कुछ दिन बाद फकीरी उन्होंने अख्तियार की। इल्मे मौसिकी कहते हैं, भाई म्युजिक को, हॉ उसके भी माहिर, शायरी के भी माहिर और हिन्दू लोग यह मानते हैं कि हिन्दी का जो मौजूदा रूप है वो उनका दिया हुआ है, हॉ। अमीर खुसरो साहब के जमाने से जो मौजूदा हिन्दी है, उसकी तवारीख शुरू हुई और उर्दू, जो आज की उर्दू है, मुझको यह मालूम हुआ, इसके भी निर्माण या इसके भी जन्म देने वाले वो ही थे। वो आम भाषा में लिखते थे, आम जबान में लोगों की। उसे हिन्दी कहिये, उर्दू कहिये लेकिन आज जो हिन्दी और उर्दू अलग हो गयी हैं, उन दोनों के यानि एक तरह से वो स्त्रोत थे।

मुझको यह मालूम हुआ है कि उनके शायद और बड़ी पीढ़ी के बुजुर्ग, दूसरी पुरानी पीढ़ी के बुजुर्ग या शायद उनके वाल्देन ही दूसरे देश से यहां आये और यहां आकर उन्होंने हिन्दुस्तान की तवारीख में वो जगह ले ली है जो शायद हजारों बरस कायम रहेगी। इतिहास उसको हमेशा याद रखेगा। मैंने यह भी पढ़ा कि हमारे बहुत से राग, इसके गाने वगरह के, वो उन्हीं के बनाये हुए हैं। तानसेन मशहूर आदमी माना जाता है, पोयट्री का, म्यूजिक का। लेकिन शायद उनसे भी ज्यादा राग अमीर खुसरो साहब ने ईजाद किये, बनाये, गढ़े, कुछ भी कहिये। यही नहीं, कव्वाली जो कि इतना हरदिल अजीज कहिये, पॉपुलर कहिये, कुछ भी कहिये, जो सोंग है, जो तरीका है गाने का, उसकी भी ईजाद करने वाले अमीर खुसरो साहब ही थे।

तो ऐसा शख्स जो सिपाही भी रहा हो, वजीरे–आजम भी रहा हो बादशाहों का, सुल्तानों का, राजाओं का, सलाहकार और मंत्री रहा हो और साथ ही फिर म्यूजिशियन हो, पोऍट हो। फारसी में भी उन्होंने पोऍटरी लिखी, शायरी की और फारस के लोग इस बात में उनका लोहा मानते हैं। और फिर एक दौर इनका जब खत्म हुआ, तो खुदा की राह पकड़ी, परमात्मा की राह उन्होंने पकड़ी और निजामुद्दीन साहब औलिया के शिष्य या शागिर्दगी म उन्होंने जिंदगी बिताई। मालूम मुझको यह भी हुआ कि इतनी उनकी ख्यादमत, इतनी उनके तईं, अकीदत। वह तो हर शिष्य की अपने गुरु के तईं होती है लेकिन शायद उनकी गैर–मामूली थी। यहां पर वो मौजूद नहीं थे देहली में, जबकि निजामुद्दीन साहब बीमार हुए। उनकी गैर–हाजिरी में उनका इंतकाल हो गया या शायद उस वक्त बेहोश थे, जिस वक्त वो वापिस आये। लेकिन वो सेहतेआब नहीं हुए। निजामुद्दीन साहब परमात्मा की खिदमत में

हातिंर हो गये। इधर छह महीने के अन्दर ये अमीर खुसरो साहब ने अपनी जिंदगी, अपने प्राण छोड़ दिये। मैं समझता हूँ केवल इसलिए कि उनको जो सदमा हुआ अपने गुरु के जाने से, डिपार्चर से, विदाई से, या वियोग से, उसको वो बर्दाश्त नहीं कर सके।

अभी मेरे दोस्त राजनारायण जी कह रहे थे कि हिन्दू–मुस्लिम में कोई फर्क नहीं है। नहीं है, होना नहीं चाहिए, लेकिन है। होता है। रन्यालय के ऊपर होता है और लोग एक तो शहर, वहां भी हैं जो यह मानते हैं कि दुनिया में जितनी बड़ी–बड़ी शिक्षाएँ और हिदायतें हैं, वो सब मुल्कों की एक हैं, सब मजहबों की एक हैं। लिहाजा वही सच्ची ईजाद है। लेकिन थोड़ी–बहुत बातों में फर्क है और जो फर्क है वो बहुत अहमियत नहीं रखती लेकिन उस तिफरके के बिना पर ही आपस में नफरत आ जाती है। एक–दूसरे से अलहदगी, बलवे, जिहाद, लड़ाई होती है। लेकिन जो बड़ी–बड़ी बातें हैं, वो सब मजहबों की एक हैं। तो जिस वक्त राजनारायण जी यह बात कहते हैं, मैं समझता हूँ वो इसी बात पर उनका जोर है। एम्फैसिज है, इशारा है कि जो असली बड़ी बातें हैं उन सब में हिन्दू और मुसलमान का या ईसाई का या बौद्ध का, कोई फर्क है नहीं। छोटी बातों पर फर्क है। खैर छोटी हो, बड़ी हो, मैं समझता हूँ इंसानियत इस्लाम और हिन्दुत्व से बड़ो चीज है। हम सब इंसान हैं और इंसान के नाते सब परमात्मा की औलाद हैं। लिहाजा एक–दूसरे के भाई ठहरते हैं।

मैं इन शब्दों के साथ हजरत अमीर खुसरो के तईं अपनी श्रद्धांजलि पेश करता हूँ।

———0———